आत्मनिर्भरता | सेना को 2032 तक देनी होंगी पांच लाख से अधिक रायफल, 155 एमएम के गोले बनाने की तैयारी तेज

कानपुर में बनने लगी स्वदेशी एके-203 रायफल

■ सुहेल खान

कानपुर। भारतीय सेना के जवानों के लिए अत्याधुनिक असॉल्ट रायफल एके-203 कानपुर की स्माल आर्म्स फैक्ट्री में बनने लगी है। रक्षा मंत्रालय के डीपीएसयू एडब्ल्यूईआईएल (एडवांस्ड वेपन्स एंड इक्विपमेंट इंडिया लिमिटेड) के अधीन आने वाली हथियार कारखानों में इनका निर्माण हो रहा है। अगले आठ सालों में यानी 2032 तक पांच लाख से अधिक असॉल्ट रायफल भारतीय सेना को देनी है। इसके बाद यह भारतीय सेना के जवानों का मूल हथियार बन जाएगा। इस हथियार को बनाने में रूस ने तकनीकी ट्रांसफर की है, जिसका भारत में पूरी तरह से स्वदेशीकरण हो रहा है। अगले कुछ वर्षों में रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत मिशन में कानपुर की भूमिका अहम होने जा रही है।

ऑर्डिनेंस फैक्ट्री कानपुर में अगले साल से 45 किमी दूर तक मार करने वाली 155 एमएम तोपों के गोले बनने लगेंगे। अभी यहां पर 25 से 30 किमी मारक क्षमता वाली तोपों के गोले बन रहे हैं। अर्मापुर ओएफसी में भारी भरकम गोले बनाने वाला 100 करोड़ की लागत से बन रहा शेल फोर्ज प्लांट अगले साल तैयार हो जाएगा। इसके बाद भारतीय सेना को धनुष, पिनाक और हॉवित्जर सिस्टम वाली तोपें के यह गोले कानपुर से भेजे जाएंगे। अभी ओएफसी को नागपुर की ऑर्डिनेंस फैक्ट्री अंबाझारी से यह गोले लेने होते हैं। ओएफसी में 105 एमएम और 125 एमएम के गोले बन रहे हैं। मांग के आधार पर 135 एमएम का गोला भी बन जाता है। असॉल्ट रायफल एके-203 का निर्माण भारत में तीन फैक्ट्रियों में हो रहा है। कानपुर की एसएएफ और कोलकाता के रायफल फैक्ट्री ईशापुर में रायफल तैयार हो रही है। इसके बाद इसे अमेठी के ऑर्डिनेंस फैक्ट्री प्रोजेक्ट कोरवा में असेंबल कराया जाता है।

एके-203 रायफलों की खासियत

- एके-203 असॉल्ट रायफल कभी जाम नहीं होती।
- इसका बटस्टॉक फोल्डिग और एडजस्टेबल है, चलाने में आसान
- नाटो ग्रेड के 7.62 एमएम का कारतूस इसमें लगता है
- मैगजीन में 30 बुलेट लोड होकर एक मिनट में 600 गोलियां दागने की क्षमता
- 400 मीटर की रेंज तक शत प्रतिशत सटीकता के साथ फायर
- एके 203 की मैगजीन में 30 राउंड होते हैं
- एके 203 की लंबाई 705 मिमी है
- एके 203 का वजन 3.8 किलो है